अनुमोदित
2018-19

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

विषय – नाट्यशास्त्र एवं रङ्गमंच

सत्र - 2018-19

संकाय – कला

(नियम, परीक्षा योजना, अंक योजना एवं पाठ्यक्रम)

20/4/2018

Scanned with CamScanner

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
नाट्यशास्त्र एवं रङ्गमंच
प्रथम प्रश्नपत्र – नाट्य का परिचय

उत्तीर्णांक – 40

अधिकतम अंक – 100

आवश्यकता :–

नाट्यशास्त्र वास्तव में साहित्यशास्त्र की परम्परा का मूल हैं साहित्य के लक्षणग्रन्थों का पल्लवन इसी को आधार मानकर ही हुआ है। विद्यार्थी इसे समझें इसके लिए इसके प्रति प्रायोगिक दृष्टि की आवश्यकता है। कला एवं रगंमंच को मूर्त रूप प्रदान करने में इसका अध्ययन हमेशा अपेक्षित रहा है। अतः इसके अध्ययन की आवश्यकता है।

उद्देश्य :–

1. नाट्यशास्त्र के द्वारा संसार की सर्वप्राचीन एवं वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के प्रति जन सामान्य की अभिरुचि बढ़ाना।
2. नाट्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र का आदिविन्दु है इसकी इसी महनीयता से लोगों को परिचित कराना।
3. नाट्यशास्त्र के द्वारा अभिनय, सरल, सहज एवं बोधगम्य है, यह भाव जाग्रत करना।
4. प्रायौगिक पद्धति अत्यन्त रोचक होने के साथ ही प्रभावोत्पादक भी है, उसके द्वारा नाट्यशास्त्र के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करना तथा इसकी उपादेयता स्थापित करना।

पाठ्यक्रम

इकाई प्रथम –

- नाट्य का उद्भव एवं विकास,
- भारतीय नाट्याचार्यों का परिचय
- नाट्य की आवश्यकता

इकाई द्वितीय – **नाट्यशास्त्र और वेद–1**

- वैदिक साहित्य में नाट्यतत्त्व
- ऋग्वेद में संवादतत्त्व
- यजुर्वेद और अभिनय

इकाई तृतीय – **नाट्यशास्त्र और वेद–2**

- सामवेद में गीत
- सामगान का वर्गीकरण
- सामगानगत साङ्गीतिक प्रक्रिया
- अथर्ववेद में रस

इकाई चतुर्थ – **नाट्य के प्रमुख तत्व**

- कथावस्तु
- अर्थोपक्षेपक
- संवाद के विविध रूप

इकाई पंचम – **नाट्य तत्व**

Scanned with CamScanner

- अर्थप्रकृतियां
- संधियां
- अवस्थाएं
- वृत्तियां

महत्त्व :– नाट्यशास्त्र का अध्ययन साहित्यशास्त्र की परम्परा को स्पष्ट करने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करेगा तथा कला एवं लुप्त होता हुआ रंगमंच भी विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. नाट्यशास्त्र का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
2. संस्कृत नाट्यसिद्धान्त – रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
3. नाट्यशास्त्र का वैदिक आधार – नीहारिका चतुर्वेदी, नाग पब्लिशर्स, नई दिल्ली,
4. भारतीय नाट्यसिद्धान्त : उद्भव एवं विकास , रामजी पाण्डेय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
5. भारतीय नाट्य : स्वरूप एवं प्रयोग – प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत परिषद्, सागर

Scanned with CamScanner

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

नाट्यशास्त्र एवं रङ्गमंच

द्वितीय प्रश्नपत्र – नाट्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्रीय तत्व

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

नाट्यशास्त्र वास्तव में साहित्यशास्त्र की परम्परा का मूल हैं साहित्य के लक्षणग्रन्थों का पल्लवन इसी को आधार मानकर ही हुआ है। विद्यार्थी इसे समझें इसके लिए इसके प्रति प्रायोगिक दृष्टि की आवश्यकता है। कला एवं रगंमंच को मूर्त रूप प्रदान करने में इसका अध्ययन हमेशा अपेक्षित रहा है। अतः इसके अध्ययन की आवश्यकता है।

उद्देश्य :–

1. नाट्यशास्त्र के द्वारा संसार की सर्वप्राचीन एवं वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के प्रति जन सामान्य की अभिरुचि बढ़ाना।
2. नाट्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र का आदिविन्दु है इसकी इसी महनीयता से लोगों को परिचित कराना।
3. नाट्यशास्त्र के द्वारा अभिनय, सरल, सहज एवं बोधगम्य है, यह भाव जाग्रत करना।
4. प्रायौगिक पद्धति अत्यन्त रोचक होने के साथ ही प्रभावोत्पादक भी है, उसके द्वारा नाट्यशास्त्र के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करना तथा इसकी उपादेयता स्थापित करना।

पाठ्यक्रम

इकाई – 1 नाट्यशास्त्र (प्रथम अध्याय)

इकाई – 2 नायक (स्वरूप व भेद)

- धीरोदात्त
- धीरललित
- धीरप्रशान्त
- धीरोद्धत
- सहनायक

इकाई – 3 नायिका (स्वरूप एवं भेद)

- स्वकीया (भेद सहित)
- परकीया (भेद सहित)
- साधारण (भेद सहित)
- अलंकार (सत्त्वज, शरीरज)

इकाई – 4 रूपक के भेद (लक्षणोदाहरण सहित)

इकाई – 5 दशरूपक – (तृतीय एवं चतुर्थ प्रकाश)

महत्त्व :–

नाट्यशास्त्र का अध्ययन साहित्यशास्त्र की परम्परा को स्पष्ट करने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करेगा तथा कला एवं लुप्त होता हुआ रंगमंच भी विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करेगा।

Scanned with CamScanner

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. नाट्यशास्त्र का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
2. संस्कृत नाट्यसिद्धान्त – रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी दशरूपक – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
3. भारतीय नाट्यसिद्धान्त : उद्भव एवं विकास , रामजी पाण्डेय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
4. नाट्यशास्त्र (प्रथम अध्याय) – धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव, संस्कृत परिषद्, सागर
5. भारतीय नाट्य की परम्परा एवं विश्व रङ्गमंच – प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली,

Scanned with CamScanner

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
नाट्यशास्त्र एवं रङ्गमंच
तृतीय प्रश्नपत्र – रंगमंच एवं रस

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

नाट्यशास्त्र वास्तव में साहित्यशास्त्र की परम्परा का मूल हैं साहित्य के लक्षणग्रन्थों का पल्लवन इसी को आधार मानकर ही हुआ है। विद्यार्थी इसे समझें इसके लिए इसके प्रति प्रायोगिक दृष्टि की आवश्यकता है। कला एवं रगंमंच को मूर्त रूप प्रदान करने में इसका अध्ययन हमेशा अपेक्षित रहा है। अतः इसके अध्ययन की आवश्यकता है।

उद्देश्य :–

1. नाट्यशास्त्र के द्वारा संसार की सर्वप्राचीन एवं वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के प्रति जन सामान्य की अभिरुचि बढ़ाना।
2. नाट्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र का आदिविन्दु है इसकी इसी महनीयता से लोगों को परिचित कराना।
3. नाट्यशास्त्र के द्वारा अभिनय, सरल, सहज एवं बोधगम्य है, यह भाव जाग्रत करना।
4. प्रायौगिक पद्धति अत्यन्त रोचक होने के साथ ही प्रभावोत्पादक भी है, उसके द्वारा नाट्यशास्त्र के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करना तथा इसकी उपादेयता स्थापित करना।

पाठ्यक्रम

इकाई – 1 रंगमंच

मण्डपविधान, प्रेक्षागृह, नेपथ्य, रंगपीठ, रगंशीर्ष, मत्तवारिणी द्वारविधि।

इकाई – 2 **रसनिरूपण – 1**

- भरतमुनि का रससूत्र
- प्रमुख आचार्यो द्वारा रससूत्र की व्याख्या
- रस के भेद
- विभाव एवं अनुभाव
- व्यभिचरिभाव

इकाई – 3 **अभिनय**

- अभिनय के प्रकार
- अभिनय के अन्य दो भेद
- हस्तमुद्रायें
- वाचिक अभिनय

इकाई – 4 **अङ्गाभिनय–1**

- शिरोऽभिनय
- हस्ताभिनय
- करण
- अङ्गहार
- वक्ष, पार्श्व, कटि एवं पाद के अभिनय
- प्रत्यङ्गाभिनय
- उपाङ्गाभिनय

Scanned with CamScanner

इकाई – 5 **स्थानक, गतिविधान एवं विपर्यय**

- स्थानक
- गतिविधान
- चारी, मण्डल, न्याय (शस्त्रधारणविधान), आसनविधान तथा भूमिका में विपर्यय

महत्त्व :–

नाट्यशास्त्र का अध्ययन साहित्यशास्त्र की परम्परा को स्पष्ट करने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करेगा तथा कला एवं लुप्त होता हुआ रंगमंच भी विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करेगा।

संदर्भग्रन्थाः–

1. नाट्यशास्त्र का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
2. संस्कृत नाट्यसिद्धान्त – रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
3. नाट्यशास्त्र में आङ्गिक अभिनय – भारतेन्दु द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, वाराणसी
4. भारतीय नाट्यसिद्धान्त : उद्भव एवं विकास , रामजी पाण्डेय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
5. भारतीय नाट्य की परम्परा एवं विश्वरंगमंच – प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी
6. नाट्यशास्त्र विश्वकोश – प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी

Scanned with CamScanner

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
नाट्यशास्त्र एवं रङ्गमंच
चतुर्थ प्रश्नपत्र – प्रायोगिक कार्य

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

नाट्क का मंचन (कोई एक)

भगवदज्जुकम्, मशकधानी, उभयरूपकम्, तण्डुलप्रस्थीयम्

Scanned with CamScanner

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
नाट्यशास्त्र एवं रङ्गमंच
द्वितीय सेमेस्टर
चतुर्थ प्रश्नपत्र – प्रायोगिक

अधिकतम अंक – **100**

उत्तीर्णांक – **40**

नाटक का मंचन
(कोई एक)

मध्यमव्यायोग, ऊरुभङ्गम् हास्यचूड़ामणि, लटकमेलकम्, कल्पवृक्ष

Scanned with CamScanner